पूजनीय श्री महाराज की श्री रामशरणम् झाबुआ उद्घाटन की शुभ यात्रा

5.3.2006 सायं 4 बजे पश्चिम एक्सप्रेस द्वारा श्री महाराज जी ने प्रस्थान करना था। जैसे ही श्रीमहाराज जी को चलने के लिए कहा गया, उन्होंने ट्रेन का पता करने को कहा, कि समय पर है या नहीं। पता चला ट्रेन 45 मिनिट लेट है। श्री महाराज जी ने 4.45 पर प्रस्थान किया और 5.10 पर रेलवे स्टेशन पहुंचे। ट्रेन दिल्ली आउटर पर 5.30 की रुकी हुई थी, 6.55 पर नई दिल्ली पहुंची। इस दौरान श्री महाराज जी 6.10 पर ध्यान में बैठ गये। जैसे ही ट्रेन आई बिल्कुल श्री महाराज जी के सामने ही उनका कोच आया, ट्रेन की कोई पूर्व सूचना न थी, बिना शोर किये रुकी, जैसे ही ट्रेन रुकी श्री महाराज जी ने आंखें खोलीं और सब को राम राम करते हुए कोच में प्रवेश कर गये। 7.10 पर ट्रेन चली और करीब 7.25 पर रात का भोजन किया और 10 बजे लाइटस आफ कर दी गई।

6.3.2006 सुबह 7.25 पर ट्रेन मेघनगर स्टेशन पर पहुंची, स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया और श्रीमहाराज जी कार में झाबुआ के लिए रवाना हुए। स्टेशन पर सब साधकों के लिए पूरा प्रबन्ध था, झाबुआ में भी सब साधकों के लिए अच्छे कमरों सहित भोजन का पूरा प्रबन्ध था। किसी भी साधक को कोई परेशानी नहीं हुई।

यज्ञ स्थान को अति रमणीक बनाया गया था। बहुत विशा ल स्थान जिसे लाल, पीले, केसरी रंगों के मौली के धागों से व रंग बिरंगे पर्दो से सजाया गया था। एक ओर श्री महाराज जी का आसन अति सुन्दर ढंग से बना था तथा सामने राम अक्षर का चित्र रखा गया था। केले के पत्तों से सारी यज्ञ शाला अति सुन्दर प्रतीत होती थी। 9 हवनकुंड बनाये गये थे जिन में विधिपूर्वक पंडितों ने पूज्य श्री महाराज जी के साथ बैठ कर पूर्णाहूति का आनन्द उठाया। जब श्रीमहाराज जी ने घी व सामग्री डालनी थी तो उन्हें एक लम्बा केले के वृक्ष का तना दिया गया, जिससे बहता हुआ घी कुंड में गया, इससे श्री महाराज जी को अग्नि का ताप नहीं लगा। आरती के साथ साथ पूर्णाहूति दी गई।

वहां की प्रथा है कि शुभ अवसर पर बलि दी जाती है, यहां पशु बलि की जगह कोहड़ा नामक फल की तलवार से विधिवत बलि देकर इस परम्परा को निभाया गया।

उस के बाद पूज्य श्री को हवन मण्डप से पंडितों द्वारा विधिपूर्वक श्री रामशरणम् के मेन गेट पर लाया गया। उस समय उनके आगे सुन्दर कलश उठाये, दो देवियां आगे चल रही थीं और दो पीछे चल रहीं थी। राईफल द्वारा सलामी देकर इस उद्घाटन समारोह की शोभा को चार चांद लग गये। 11 फायर की सलामी द्वारा देहरी पूजन व शिलालेख का अनावरण किया गया। एक अद्भुत नज़ारा साधकों को देखने को मिला। हर्षोल्लास का नज़ारा, परमेश्वर की कृपा बरसती प्रत्यक्ष महसूस हुई। इस सारे समारोह की running commentary साथ साथ हो रही थी, इस लिए जो साधक देख नहीं पा रहे थे वे इस समारोह को कानों से सुन हर्षित हो रहे थे। श्री महाराज जी ने ज्यों ही श्री अधिष्ठान का पर्दा खोला, तालियों की गूंज से सारा श्री रामशरणम् गूंज गया।आदिवासी विधि से चूल्हा पूजन हुआ, श्री महाराज जी के सामने दूध उबाल कर यह पूजन किया गया और पानी के भरे घड़ों से कुंभ पूजन रसोई में सम्पन्न हुआ।

उस के बाद श्री महाराज जी ने सत्संग हाल में प्रवेश किया और मंगल नाम राम राम' की धुन से सारा हाल गूंज गया। उसके बाद श्री अमृतवाणी का पाठ और श्री महाराज जी द्वारा परमेश्वर के आगे प्रार्थना व आरती की गई। उसके बाद वहां की वेषभूषा में सजीं महिला साधक प्रसाद की थाली लाई जिसे श्री महाराज जी ने लेकर श्री अधिष्ठान जी, स्वामी जी व गुरुदेव को भोग लगाया। तब बजी बधाई 'आज बधाई बाजे श्री रामशरणम् में' से सभी साधकों व परमेश्वर को रिझाया। समय की कमी के कारण श्री महाराज जी ने थोड़ा सा प्रवचन व बधाई दे कर प्रसाद ग्रहण करने के लिए अनुरोध किया। 35000 साधकों द्वारा प्रसाद ग्रहण किया गया।

खुली बैठक का आयोजन बहुत ही खुले मैदान में, दोपहर 2.30 से 4.30 बजे तक श्री रामशरणम् से लगभग 2 कि.मी की दूरी पर था किया गया, जीवन में इतना खुला पंडाल पहले कभी नहीं देखा ऐसा लगता था कि लोग पता नहीं कहां से आ रहे हैं, 40000 की संख्या में साधक एकत्रित थे।

वहां के आदिवासी साधकों ने अपनी परम्परा अनुसार श्री महाराज जी को वहां की पगड़ी पहनाई और फिर वहां के वस्त्र जैकेट पहनाई व अस्त्र भेंट किये गये। आदिवासी परम्परा में किसी भी सम्मानित व्यक्ति का सम्मान इसी प्रकार किया जाता है। श्री महाराज ने अति प्रसन्नता से सब ग्रहण किया और उन को अति प्रेमपूर्वक धन्यवाद दिया।

'राम नाम लौ लागी' की धुन के बाद श्री महाराज जी का प्रवचन हुआ। सूई के गिरने की आवाज़ भी सुनाई दे ऐसी शान्ति थी। महाराज श्री ने कहा,''श्री रामशरणम् क्या है ?जहां पहुंच कर जीवन का लक्ष्य याद आ जाये। क्या है लक्ष्य? एक संत की कहानी बताई जो दैवी घोषणा(कि पुरानी चीज़ बदल कर नई ले लें) के बाबजूद भी नहीं गये, उन्होंने कहा सब से सर्वोत्तम चीज़ तो भगवान ने मानव देह दे रखी- राम नाम जपने के लिए।दूसरी कहानी, एक महामुनि की सुनाई जिन्होंने जिन्दगी भर हर किसी से सीखा, चाहे वह कौआ था, चोर था या बालक था। जहां जा कर झुकना आ जाये, नतमस्तक होना आ जाये, गर्दन झुक जाये-वह है श्री रामशरणम्। परमेश्वर साधना पर बिकाऊ नहीं-साधना में थकना, हारना होता है। शरणागति, समर्पण की यात्रा।

5375 साधकों ने राम नाम की दीक्षा ग्रहण कर अपने को धन्य अति धन्य माना। 1,31,000 रुपये के ग्रन्थों की बिक्री हुई।

शाम को 7 से 8 बजे श्री अमृतवाणी पाठ श्री रामशरणम् में हुआ, जो वहां का नित्य का कार्यक्रम है। श्री महाराज जी ने कहा, एक अहंकारी, निरभिमानी हो जाये तो क्या यह राम नाम का प्रताप कम है। विनम्रता व झुकना आ जाये, राम नाम पाकर भी झुकना नहीं आया तो मंजिल दूर है।

एक दुर्गुण जिससे बच्चा, बड़ा, साधक सब ग्रस्त हैं वह है प्रशंसा। थोड़े से भी सत्कर्म से प्रशंसा रुपी पानी पड़ता ही है और मद व मान की घास उगती है और एक अच्छा साधक संत, गुरु, परमात्मा से बार बार विनती करके यह घास उखड़वाता रहता है। देवर्षि नारद की प्रशंसा की कथा भी सुनाई। 4000साधक इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

7.3.2006 सुबह खुली बैठक, उसी खुले मैदान में थी, इस का समय 9 से 10.30 बजे तक था। 8000 साधक उपस्थित थे और महाराज श्री ने केवट जी महाराज की कथा सुनाई, उन्हें बताया कि आप उन्हीं की सन्तान हैं, अपने पूर्वजों की सी शुद्वता, निश्छलता, सरलता आप में है। उन्हें केवट का श्री राम से जो सम्बन्ध था उसका वर्णन विस्तारपूर्वक वर्णन अश्रु भरे नेत्रों से किया। दूसरा प्रसंग था एक सेठ का जो अपने बेटों को चार अनमोल रतन दे रहा था- क्षमा, निरभिमानता, विश्वास और वैराग्य, सारों का सार है, सम्भाल कर रखना- जीवन में दिव्यता आ जायेगी।

जहां आ कर जीवन का दिव्यकरण हो जाये उसे कहेगे श्री रामशरणम्।। तत्पश्चात् 610 साधकों ने राम नाम की दीक्षा ग्रहण की। उसके बाद श्री रामशरणम् में 49 साधकों को श्री अधिष्ठान जी दिये गये। दोपहर 1 बजे श्री महाराज ने उज्जैन के लिए प्रस्थान किया। झाबुआ से उज्जैन 3.30 घंटे की कार द्वारा यात्रा है।

अनुभूतियां -

1. श्री रामशरणम् भवन की तैयारी 13 महीनों में हुई, 2.5 करोड़ की लागत का भवन 90 लाख में तैयार हुआ। साधकों ने अपनी कार सेवा के माध्यम से, बाहरी मज़दूरों का प्रयोग नहीं किया। दिन में महिलायें सेवा करतीं रातको पुरुष सेवा कार्य में रत रहते। एक अद्भुत सेवा, स्नेह से बना यह 33000 Sq. Feet का यह अद्भुत भवन।
2. कुछ साधकों ने बताया कि उन्हें कई बार स्वामी जी महाराज चक्कर लगाते हुए नज़र आये।यदि कोई साधक थक गया और उसे नींद का अहसास हुआ तो उसकी पीठ की मालिश करते हुए पाये गये।
3. एक नौजवान युवक छत पर एक सरिया खींचते हुए, हाथ से सरिया छूट जाने की वजह से गिर गया और गिर कर एक पेड़ पर लटक गया, एक खरोंच तक भी नहीं आई, लोग परमात्मा की असीम कृपा का वर्णन कर रहे थे।
4. एक वरिष्ठ साधक के बारे में बताया गया कि उन का तबादला श्री रामशरणम् के बनने के समय के दौरान किसी दूसरे शहर में हो गया, उन्होंने यह कह कर नौकरी छोड़ दी कि मेरा श्रीरामशरणम बन रहा है, मैं यहां से नहीं जा सकता। परमात्मा के घर कोई कमी नहीं, बाद में उन के पुत्र को बहुत ही अच्छी नौकरी मिल गई।
5. झाबुआ के एक साधक साधिका(पति पत्नी) शान्ति जी और साधक संतोष जी है। जो करियाने की दुकान चलाते हैं। वहां के लोगों का कहना है कि इतने उच्च साधक हैं कि जब भी भवन में किसी तरह की कोई समस्या आती थी तो हम उस दम्पति को वहां बुलवाते थे। और समस्या का समाधान शीघ्र हो जाता था। साधिका वैसे ही सारा दिन सेवा करती थी, राम राम का जाप करते हुए और संतोष जी भी दुकान से खाली हो कर रात को सेवा में कार्यरत रहते। वहां के प्रबन्धकों ने 'देहरी पूजन' इन्हीं से करवाना उचित समझा।